जुलाई – सितम्बर 2026 | मूल्य ₹ 100/-

UPHIN/2016/67435 | ISSN–2456–0413

पतहर

A Peer-Reviewed Hindi Quarterly Magazine



UPI ID: narayanojha2013-1@oksbi

पीयर रिव्यूड हिन्दी तिमाही पत्रिका

पतहर

वर्ष 11 अंक 3
जुलाई - सितम्बर 2026
इस अंक का मूल्य ₹100
सामान्य अंक मूल्य ₹ 30

प्रबन्ध सम्पादक
चक्रपाणि ओझा
मो. 9919294782

सम्पादक
विभूति नारायण ओझा

सहायक सम्पादक
डॉ. कमलेश कुमार यादव
मो. 94223 86011

Email-hindipatahar@gmail.com

Mob. : 9450740268

http://patahar.blogspot.com/?m=1
www.notnul.com

आवरण
बंशीलाल परमार
+919926494975

पतहर, स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक विभूति नारायण ओझा द्वारा ज्योति ऑफसेट प्रेस सलेमपुर देवरिया से मुद्रित एवं कार्यालय ग्राम बहादुरपुर पोस्ट बड़हरा (खुखुन्दू) जिला देवरिया (उ.प्र.) से प्रकाशित।

सम्पादक- विभूति नारायण ओझा

प्रकाशित सामग्री से सम्पादक/ प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। विवादास्पद मामले देवरिया न्यायालय के अधीन होगा।

UPHIN/2016/67435

ISSN-2456-0413

पीयर रिव्यूड टीम

- **प्रो. चितरंजन मिश्र,**
  पूर्व प्रति कुलपति, हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा।
- **प्रो. मुरली मनोहर पाठक,**
  कुलपति , श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।
- **प्रो. रामदरश राय,**
  कृतकार्य आचार्य, हिंदी विभाग एवं निदेशक पत्रकारिता संस्थान, गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर।
- **डॉ विक्रम मिश्र,**
  सेवानिवृत्त उपाचार्य, हिंदी विभाग, गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर।
- **प्रो. अरविंद त्रिपाठी,**
  कृतकार्य आचार्य, हिंदी विभाग, गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर।
- **प्रो. चन्द्रेश्वर,**
  कृत आचार्य, एम.एल.के.पी.जी. कॉलेज, बलरामपुर।
- **प्रो. अंजुमन आरा,**
  अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, रेवेंशा विश्वविद्यालय, कटक, उड़ीसा।
- **प्रो. अजय कुमार शुक्ला,**
  अध्यक्ष, अंग्रेजी विभाग, गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर।
- **डॉ. सचिन गपाट,**
  सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, मुंबई विश्वविद्यालय मुंबई।
- **डॉ. मधुसूदन सिंह,**
  सहायक आचार्य, दिग्विजय नाथ एलटी प्रशिक्षण महाविद्यालय, गोरखपुर।
- **डॉ. बसुंधरा उपाध्याय,**
  सहायक आचार्य, हिंदी, राजकीय महाविद्यालय, पिथौरागढ़, उत्तराखंड।
- **डॉ. लक्ष्मी मिश्रा,**
  सहयुक्त आचार्य, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली।
- **डॉ. अजीत प्रियदर्शी,**
  सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, डीएवी पीजी कॉलेज लखनऊ।
- **डॉ. प्रकाश कुमार अग्रवाल,**
  सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, खड़गपुर कॉलेज पश्चिम बंगाल।
- **डॉ. उन्मेष कुमार सिन्हा,**
  सहायक आचार्य, हिन्दी, हिन्दू कॉलेज, मुरादाबाद।
- **डॉ. विजय आनंद मिश्र,**
  सहायक आचार्य हिन्दी, जेएलएन पीजी कालेज, महराजगंज।
- **डॉ. अरिमर्दन कुमार त्रिपाठी**
  सहाचार्य, अनुसंधान एवं भाषा विकास विभाग, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा।
- **डॉ संदीप कुमार सिंह**
  सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, राजकीय महाविद्यालय, बगहा।
- **डॉ बिपिन कुमार यादव,**
  सहायक आचार्य, जेएलएन पीजी कालेज, महराजगंज।

खाता विवरण – पतहर, खाता सं. : 98742200010701
IFSC : CNRB0019874, केनरा बैंक, खुखुन्दू, देवरिया

गूगल पे : 9450740268

UPI ID: narayanojha2013-1@oksbi

मुद्रित पृष्ठों की सं.-88

सम्पादकीय ✍

Gen Z का आक्रोश : साहित्य एवं समाज की भूमिका

आज की युवा पीढ़ी में अपनी आकांक्षाओं को मूर्त रूप देने का अदम्य उत्साह और जीवंत जिजीविषा दिखाई देती है; किंतु साथ ही, अपनी लक्ष्यापूर्ति की राह में विद्यमान बाधाओं को देखकर उनमें एक गहरा असंतोष और आक्रोश भी स्पष्ट परिलक्षित होता है। किसी भी जीवंत समाज की युवा पीढ़ी केवल उसका भावी ढाँचा मात्र नहीं होती, अपितु वह वर्तमान व्यवस्था की विसंगतियों एवं विद्रूपताओं को पहचानकर परिवर्तन की नई संभावनाओं को आकार देने वाली संवाहक शक्ति भी होती है। डिजिटल युग के आलोक में पल्लवित-पुष्पित 'Gen Z' (नई पीढ़ी) आज इसी ऐतिहासिक भूमिका में दृष्टिगोचर हो रही है। शिक्षा, सुलभ रोजगार, सामाजिक समरसता, पर्यावरण-संरक्षण तथा एक सुरक्षित भविष्य से जुड़े उसके यक्ष-प्रश्न आज के सार्वजनिक एवं वैचारिक विमर्श के केंद्र में हैं।

युवाओं की यह आकुलता कभी व्यवस्था-विरोधी सुरों में, कभी प्रखर डिजिटल अभिव्यक्ति में, तो कभी सत्ता-प्रतिष्ठानों से तीखे सवाल पूछने के रूप में मुखरित होती है। इस आक्रोश को केवल अधीरता, भटकाव या पीढ़ीगत असंतोष मानकर खारिज कर देना न केवल अदूरदर्शिता होगी, बल्कि अनुचित भी होगा। वस्तुतः इस उद्वेग के नेपथ्य में एक गरिमामय जीवन की उत्कट लालसा, अवसरों की खोज और सामाजिक-प्रशासनिक ढाँचे से जुड़ी जायज़ अपेक्षाएँ निहित हैं। अतः 'Gen Z' की चेतना को समझना समकालीन भारतीय समाज की जटिल चुनौतियों और उसकी असीम संभावनाओं को समझने की एक अनिवार्य शर्त है।

युवा मन में पनपती असुरक्षा और कुंठा का एक मुख्य कारण व्यावहारिक शिक्षा तथा रोजगार के अवसरों के बीच चौड़ी होती खाई है। उच्च अकादमिक उपाधियाँ प्राप्त करने के उपरांत भी रोजगार की अनिश्चितता, प्रतियोगी परीक्षाओं का दैत्यकार दबाव और अंधी प्रतिस्पर्धा उनके भविष्य को गहन चिंता के अंधकार में धकेलती है। NEET-UG जैसी प्रतिष्ठित परीक्षाओं से जुड़े हालिया विवादों और पारदर्शी परीक्षा-प्रणालियों में हुई गंभीर लापरवाहियों ने संपूर्ण चयन-प्रक्रिया की विश्वसनीयता पर गंभीर प्रश्नचिह्न खड़े कर दिए हैं। ऐसे दृष्टांत यह सिद्ध करते हैं कि युवाओं के लिए ये परीक्षाएँ केवल अंक या प्रवेश का माध्यम भर नहीं हैं, बल्कि यह उनकी वर्षों की हाड़-तोड़ मेहनत, परिवार की उम्मीदों और एक स्वाभिमानी जीवन की आकांक्षा का दाँव है। जब उन्हें अपनी अनवरत साधना और उपलब्ध अवसरों के बीच एक दुखद असंतुलन दिखता है, तो जनाक्रोश का विस्फोट स्वाभाविक हो जाता है। इस असंतोष का सामना करने हेतु युवाओं की वेदना को आत्मीयता से सुनना और संस्थागत जवाबदेही व पारदर्शिता सुनिश्चित करना परम आवश्यक है।

वर्तमान डिजिटल क्रान्ति ने इस पीढ़ी को अपने मनोभावों की अभिव्यक्ति, ज्ञान-प्रसार एवं जन-विमर्श में सहभागिता के नए आयाम प्रदान किए हैं। सोशल मीडिया के माध्यम से बेरोजगारी, लैंगिक न्याय, पर्यावरण संकट और नागरिक अधिकारों जैसे ज्वलंत विषय आज वृहद् चिंतन का अंग बन रहे हैं। डिजिटल पत्रकारिता और स्वतंत्र रचनाकारों (Content Creators) ने इन जटिल सामाजिक-राजनीतिक प्रश्नों को नए पाठकों और दर्शकों तक पहुँचाने में सफलता पाई है। किंतु, सूचना की त्वरित गति सदैव उसकी प्रामाणिकता की संवाहक नहीं होती। भ्रामक शीर्षक, संदर्भहीन तथ्य और अपुष्ट दावे बहुधा जनमत को भ्रमित कर देते हैं। अतएव, इस डिजिटल सक्रियता के साथ-साथ तथ्य-शोधन, विवेकशीलता और सामाजिक उत्तरदायित्व का बोध अनिवार्य है। हमें यह भी विस्मृत नहीं करना चाहिए कि सोशल मीडिया पर दृश्यमान यह आक्रोश पूरी 'Gen Z' की समग्र अभिव्यक्ति नहीं है, क्योंकि डिजिटल संसाधनों की पहुँच और अभिव्यक्ति के अवसर आज भी समाज के सभी वर्गों के पास समान रूप से सुलभ नहीं हैं।

इस पीढ़ी में अद्भुत तकनीकी दक्षता, मौलिक सृजनात्मकता और सामाजिक संवेदनशीलता की अपार संभावनाएँ विद्यमान हैं, किंतु साथ ही वह तीव्र आर्थिक दबावों, विषमताओं और सूचनात्मक भ्रम जाल से पूरी तरह मुक्त भी नहीं है। इसलिए, इस युवा आक्रोश का मूल्यांकन न तो अंध-समर्थन के आधार पर होना चाहिए और न ही पूर्ण अस्वीकृति या उपेक्षा के आधार पर। आवश्यकता इस बात की है कि उनके यक्ष-प्रश्नों को पूरी गंभीरता से सुना जाए, उनके तर्कों की कसौटी पर कसकर जाँच की जाए और उनकी सकारात्मक व कल्याणकारी पहलों को प्रोत्साहित किया जाए। यह शुभ संकेत है कि आज विभिन्न सामाजिक व प्रशासनिक संगठनों के शीर्ष पुरोधा भी युवाओं के इन स्पंदनों को सुनने और समझने की आवश्यकता स्वीकार कर रहे हैं।